

पाठ 2: मीरा

मीरा: जीवन परिचय

भूमिका

भारतीय संत परंपरा में मीरा बाई का नाम अत्यंत श्रद्धा और भक्ति से लिया जाता है। वे न केवल भक्ति कालीन युग की प्रमुख कवयित्री थीं, बल्कि एक समाज-सुधारक और स्त्री स्वतंत्रता की प्रेरणादायक प्रतीक भी थीं। उनकी कविताओं और भजनों में आत्मिक प्रेम, कृष्ण भक्ति और सामाजिक बंधनों से मुक्ति का स्वर सुनाई देता है। उनका साहित्यिक योगदान इतना व्यापक और प्रभावशाली है कि आज भी उनके पद जनमानस में गूंजते हैं। यह लेख मीरा बाई के जीवन, साहित्यिक परिचय और उनकी रचनाओं का विस्तृत और विश्लेषणात्मक परिचय प्रस्तुत करता है।

जीवन परिचय

मीरा बाई का जन्म लगभग 1498 ईस्वी में राजस्थान के मेड़ता (वर्तमान नागौर जिला) में हुआ था। उनके पिता रतन सिंह राठौड़ एक प्रतिष्ठित राजपूत सरदार थे। मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्ति में लीन थीं। ऐसा माना जाता है कि पाँच वर्ष की आयु में ही उन्होंने एक साधु से श्रीकृष्ण की मूर्ति प्राप्त की और उसे अपना पति मान लिया।

मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा भोजराज से हुआ था। विवाह के बाद भी मीरा की कृष्ण भक्ति में कोई अंतर नहीं आया, बल्कि वह और भी प्रगाढ़ हो गई। मीरा की भक्ति और साधना पारंपरिक राजघराने की सीमाओं से परे थीं, जो परिवार और समाज को स्वीकार्य नहीं थी। उनके भक्ति मार्ग और स्वतंत्र सोच के कारण उन्हें कई बार विरोध, तिरस्कार और अपमान का सामना करना पड़ा।

राजनीतिक और पारिवारिक स्थितियाँ मीरा के जीवन में कठिनाइयाँ लेकर आईं, परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। वह कृष्ण भक्ति के मार्ग पर निरंतर अग्रसर रहीं। बाद में वे अपने पति के निधन के पश्चात साधु बनकर वृंदावन, द्वारका और अन्य तीर्थ स्थलों पर भ्रमण करती रहीं और अंततः द्वारका में ही उन्होंने समाधि ली।

साहित्यिक परिचय

मीरा बाई भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री थीं और उनकी कविताएँ 'सगुण भक्ति धारा' के अंतर्गत आती हैं। विशेषकर, वे 'वैष्णव संप्रदाय' और 'पुष्टिमार्ग' की अनुयायी मानी जाती हैं। उनके पदों में भक्ति, प्रेम, विरह और आत्मसमर्पण की अभिव्यक्ति अत्यंत मार्मिक और संवेगशील ढंग से हुई है।

मीरा के साहित्य में भाषा की सरलता, भावों की गहराई और आत्मीयता प्रमुख गुण हैं। उन्होंने जनभाषा में काव्य रचना की, जिससे उनकी रचनाएँ जनसाधारण तक पहुँच सकीं। उनकी कविताओं में राजस्थानी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली का प्रयोग मिलता है।

2

मीरा के पदों में भक्ति के साथ-साथ स्त्री चेतना का भी स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। वे पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के विरोध में खड़ी दिखती हैं और एक स्त्री की स्वतंत्रता व आत्मबल का परिचय कराती हैं।

मीरा की रचनाएँ और विशेषताएँ

मीरा बाई की अधिकांश रचनाएँ पदों के रूप में प्राप्त होती हैं। इन पदों में कृष्ण के प्रति अनुराग, आत्मसमर्पण, पीड़ा और सामाजिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा प्रमुख है।

प्रमुख रचनात्मक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. कृष्ण भक्ति और आत्मसमर्पण: मीरा के लिए कृष्ण न केवल आराध्य थे, बल्कि वे उन्हें अपना पति, प्रियतम और जीवन का सार मानती थीं। उन्होंने स्वयं को 'दासी' और 'सखी' के रूप में प्रस्तुत किया।
2. विरह और मिलन की भावना: मीरा के पदों में विरह की वेदना अत्यंत मार्मिक ढंग से उभरी है। वे कृष्ण से एकत्व की लालसा व्यक्त करती हैं।
3. सामाजिक विरोध का चित्रण: उन्होंने पंडितों, रूढ़िवादी परंपराओं और स्त्री को बंधन में रखने वाले नियमों का विरोध किया।
4. भाषा की सहजता और लोकधर्मी स्वर: उनकी भाषा सरल, भावप्रवण और जनभाषा से जुड़ी हुई है। लोकगीतों की तरह उनके पद सहजता से गाए जाते हैं।
5. आत्मिक अनुभूति और रहस्यवाद: उनके पदों में आत्मानुभूति की गहराई और आध्यात्मिक चेतना का रहस्यात्मक स्वर स्पष्ट दिखाई देता है।

मीरा के प्रमुख पदों और उनके भावार्थ

1. "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो" → इस पद में मीरा ने भक्ति को अमूल्य धन बताया है जिसे उन्होंने अपने अंतःकरण में पाया है।
2. "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई" → इसमें मीरा कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानती हैं और सांसारिक सभी संबंधों से स्वयं को मुक्त कर चुकी हैं।
3. "जो मैं ऐसा जानती, प्रीत किए दुख होय" → यह पद मीरा की गहन आत्मपीड़ा का परिचायक है जिसमें वे भक्ति की कठिन राह को समझने की अभिव्यक्ति करती हैं।
4. "मने चाकर राखो जी, मने चाकर राखो" → मीरा स्वयं को ईश्वर की दासी घोषित कर, सेवा और समर्पण की भावना व्यक्त करती हैं।

मीरा बाई की भक्ति का सामाजिक प्रभाव

3

मीरा बाई की भक्ति केवल व्यक्तिगत साधना तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका गहरा सामाजिक प्रभाव भी पड़ा। उन्होंने स्त्रियों को भक्ति के माध्यम से आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता का मार्ग दिखाया। उनके जीवन ने यह सिद्ध कर दिया कि एक स्त्री भी अपने विचारों, श्रद्धा और विश्वास के साथ समाज की रूढ़ियों को चुनौती दे सकती है।

उन्होंने भक्ति को मंदिरों, पंडितों और कर्मकांडों से मुक्त कर आत्मिक स्तर पर स्थापित किया। उनकी कविताएँ आज भी जनमानस में उतनी ही जीवंत हैं जितनी अपने समय में थीं।

मीरा बाई की लोकप्रियता और वैश्विक प्रभाव

मीरा बाई की रचनाओं का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है। उनकी कविताओं पर आधारित संगीत, नृत्य, नाटक और फिल्में आज भी लोकप्रिय हैं। भारत में ही नहीं, विदेशों में भी मीरा की भक्ति और काव्य कला का सम्मान होता है। अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों में उनके पदों को गाया और पढ़ा जाता है।

निष्कर्ष

मीरा बाई का जीवन और साहित्य हमें यह सिखाता है कि भक्ति केवल एक धार्मिक साधना नहीं, बल्कि यह सामाजिक बदलाव, आत्मिक जागरण और मानवीय मूल्यों की स्थापना का मार्ग भी है। उनकी कविताएँ प्रेम, भक्ति, संघर्ष और आत्मसम्मान का अद्वितीय संगम हैं।

वे एक साधिका, कवयित्री और समाज-सुधारक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगी। उनका साहित्य आने वाली पीढ़ियों को भक्ति, स्वतंत्रता और आत्मबल की प्रेरणा देता रहेगा। मीरा बाई का नाम भारतीय संस्कृति में प्रेम और भक्ति की अमर गाथा के रूप में सदैव अंकित रहेगा।

प्रश्न - अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है ?

उत्तर 1:

(1) द्रौपदी का उदाहरण: मीरा अपने आराध्य भगवान हरि से प्रार्थना करती हैं कि वे उसकी पीड़ा और कष्टों को दूर करें। वह भगवान से निवेदन करती हैं कि जैसे आपने चीर बढ़ाकर द्रौपदी की लाज बचाई थी, वैसे ही मेरे दुखों को भी समाप्त कर दें।

(2) विनम्र प्रार्थना: मीरा भगवान से याचना करती हैं कि जैसे आपने डूबते हुए हाथी को बचाया था, वैसे ही मेरे कष्ट भी हर लें। वह कहती हैं कि आप तो भक्तों के दुःख दूर करने के लिए अवतार लेते हैं। मैं आपकी दासी हूँ और सांसारिक कष्टों से परेशान हूँ। कृपया मेरी विपत्ति का अंत करें।

प्रश्न 2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:

(i) सेवा का आग्रह:

मीराबाई अपने आराध्य देव, श्याम, की सेविका बनने की प्रबल इच्छा रखती हैं। वह प्रार्थना करती हैं कि, "हे प्रभु! मुझे अपनी सेवा का अवसर प्रदान करें। मैं सुबह और शाम आपकी भक्ति और सेवा में समर्पित रहूँगी।"

(ii) चाकरी का कारण:

मीराबाई के श्याम की सेविका बनने का मुख्य कारण यह है कि सेविका के रूप में वह श्याम के घर और बाग-बगीचों में काम कर सकेंगी। ऐसा करने से उन्हें बार-बार अपने स्वामी के दर्शन करने का अवसर मिलेगा। मीराबाई का विश्वास है कि उनके स्वामी के दर्शन का यह सबसे सरल और सुलभ माध्यम है। स्वामी के बाग में कार्य करते हुए, जब वे वहाँ आएंगे, तो मीराबाई को सहज रूप से उनके दर्शन प्राप्त होंगे। इस प्रकार, मीराबाई अपने आराध्य के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को और अधिक प्रगाढ़ बनाना चाहती हैं।

प्रश्न 3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उत्तर 3:

(i) श्रीकृष्ण का अद्वितीय सौंदर्य – मीराबाई अपने आराध्य श्रीकृष्ण के अनुपम रूप का वर्णन करती हैं। वह कहती हैं कि उनके स्वामी के सिर पर मोर पंख का मुकुट शोभायमान है। उन्होंने पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं, और उनके गले में वैजयंती फूलों की माला की शोभा है। यह दिव्य स्वरूप अत्यंत मनमोहक और अद्वितीय है।

(ii) मुरली बजाते हुए श्रीकृष्ण – मीराबाई बताती हैं कि श्रीकृष्ण इस अद्भुत वेशभूषा में वृंदावन में गायों को चराते हुए मुरली बजा रहे हैं। मुरली की मधुर ध्वनि और उनका अलौकिक स्वरूप मन को मोह लेने वाला है। मीराबाई श्रीकृष्ण को इस रूप में देखकर अत्यधिक आनंदित होती हैं।

प्रश्न 4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर 4:

(i) मीरा की भाषा: मीराबाई राजस्थान की रहने वाली थीं, इसलिए उनकी रचनाओं में राजस्थानी भाषा का प्रभाव स्वाभाविक है। इसके साथ ही, वे वृंदावन, गुजरात और द्वारका जैसे स्थानों की यात्रा करती रहती थीं, जिससे उनकी काव्य भाषा में ब्रज और गुजराती का भी समावेश देखने को मिलता है। कुल मिलाकर, मीरा की भाषा राजस्थानी, ब्रज और गुजराती के मिश्रण से बनी है।

(ii) मीरा की शैली:

मीराबाई की शैली संत कवियों की शैली से मिलती-जुलती है, लेकिन इसमें राजस्थानी काव्य शैली का अनोखा समावेश है। उनके पदों में मिठास और सरलता झलकती है। वे अपने भावों को बहुत ही कोमल और सहज शब्दों में प्रस्तुत करती हैं। उनकी शैली में शास्त्रीयता कम और लोक शैली का प्रभाव अधिक है। मीराबाई ने जनभाषा और लोकभाषा का अधिक उपयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ सभी के लिए समझने योग्य और प्रिय बन गईं।

5

संक्षेप में: मीराबाई की भाषा और शैली ने उनकी कविताओं को लोकजीवन से जोड़ते हुए उन्हें एक अनोखी पहचान दी है।

प्रश्न 5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

उत्तर: 5

मीराबाई अपने आराध्य श्रीकृष्ण को पाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास करने के लिए तत्पर हैं:

1. महल का निर्माण:

मीराबाई चाहती हैं कि उनके प्रभु श्रीकृष्ण के लिए ऊँचे-ऊँचे महल बनाए जाएँ, जिनमें सुंदर झरोखे हों। इन झरोखों के माध्यम से वह अपने स्वामी के दर्शन कर सकेंगी।

2. सज-धज और शृंगार:

अपने आराध्य को प्रसन्न करने के लिए मीराबाई सुंदर वस्त्र पहनना चाहती हैं। वह विशेष रूप से फूलों की आकृति वाली कुसुंबी साड़ी पहनकर श्रीकृष्ण के दर्शन करने की अभिलाषा रखती हैं।

3. प्रार्थना और निवेदन:

मीराबाई भगवान से प्रार्थना करती हैं कि वे आधी रात को यमुना नदी के किनारे दर्शन दें। उनके अनुसार, यही वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण ने रासलीला रचाई थी।

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

1. हरि आप हरो जन री भीर ।

द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर ।

भगत कारण रूपी नरहरि, धर्यो आप सरीर ।

उत्तर 1: इन पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

1. भक्ति रस का प्राधान्य

- इन पंक्तियों में भक्ति रस की प्रधानता है। कवि भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे भक्तों की विपत्ति दूर करें।
- भगवान का द्रोपदी की लाज बचाने और नरसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा करने का उल्लेख भक्ति भाव को गहराई प्रदान करता है।

2. उपमा और बिंब का प्रयोग

- "द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर" में भगवान की कृपा का सुंदर बिंब प्रस्तुत किया गया है।
- भगवान को भक्तों के रक्षक के रूप में प्रस्तुत करते हुए कवि ने उनके कार्यों को आदर्श रूप में चित्रित किया है।

6

3. सरल भाषा और प्रवाहमयता

- भाषा सरल, प्रवाहमयी और प्रभावी है। इसे पढ़ने या सुनने पर भक्ति भाव और आध्यात्मिकता का अनुभव होता है।

4. भगवान की सर्वशक्तिमान छवि

- "भगत कारण रूपी नरहरि, धर्यो आप सरीर" में भगवान को भक्तों की रक्षा के लिए किसी भी रूप में प्रकट होने वाला बताया गया है। यह उनकी सर्वशक्तिमान छवि को सशक्त करता है।

5. भावप्रधानता

- इन पंक्तियों में भावों की प्रधानता है। हर शब्द में भक्ति और श्रद्धा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

निष्कर्ष

इन पंक्तियों में भक्त और भगवान के बीच के संबंध को अत्यंत भावपूर्ण और सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है। सरलता, गहराई और आध्यात्मिकता के कारण इन पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य अद्वितीय है।

2. बूढतो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

उत्तर 2: काव्य-सौंदर्य विश्लेषण

पंक्ति 1:

"बूढतो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।"

इस पंक्ति में कवयित्री मीरा बाई ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति और उनकी करुणा को व्यक्त किया है। यहाँ "गजराज" से अभिप्राय गजेन्द्र से है, जो पौराणिक कथा के अनुसार एक मगरमच्छ के चंगुल में फँस गया था। गजराज की पीड़ा को देखकर भगवान विष्णु ने उसकी रक्षा की और उसे मुक्ति प्रदान की।

इस पंक्ति का काव्य-सौंदर्य:

1. प्रतीकात्मकता: गजराज के माध्यम से मीरा ने यह समझाया है कि भगवान अपने भक्तों की हर पीड़ा हरने के लिए तत्पर रहते हैं।
2. करुण रस: गजराज की पीड़ा और भगवान की कृपा का वर्णन करुण रस से ओतप्रोत है।
3. अनुप्रास अलंकार: "काटी कुण्जर पीर" में 'क' और 'पी' की पुनरावृत्ति अनुप्रास अलंकार उत्पन्न करती है।

पंक्ति 2:

"दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।"

7

दूसरी पंक्ति में मीरा स्वयं को गिरधर (श्रीकृष्ण) की दासी घोषित करती हैं। "भीर" का अर्थ है कष्ट या दुःख। मीरा यहाँ गिरधर से प्रार्थना करती हैं कि जैसे उन्होंने गजराज की पीड़ा हर ली थी, वैसे ही उनके कष्ट भी दूर करें।

इस पंक्ति का काव्य-सौंदर्य:

1. भक्तिभाव: मीरा की कृष्ण के प्रति निष्ठा और आत्मसमर्पण स्पष्ट है।
2. सादगी और प्रभाव: सरल शब्दों में मीरा ने अपनी भावनाएँ प्रकट की हैं, जो पाठकों के हृदय को छूती हैं।
3. रागात्मकता: यह पंक्ति भक्ति और प्रेम से भरपूर है, जो रागात्मकता उत्पन्न करती है।

सार:

इस दोहे में भगवान की करुणा, भक्तवत्सलता और मीरा की अनन्य भक्ति का अद्भुत चित्रण है। इसकी भाषा सरल और हृदयस्पर्शी है, जो पाठक के मन में भक्ति की भावना जागृत करती है।

3. चाकरी में दरसण पास्यँ सुमरण पास्यँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्यँ तीनूँ बाताँ सरसी।

उत्तर 3: उक्त पंक्तियाँ भारतीय भक्ति आंदोलन की एक विशिष्ट छवि को उजागर करती हैं, जहाँ संत काव्य के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति के लिए सच्ची भक्ति और आंतरिक भावनाओं पर बल देते हैं।

काव्य-सौंदर्य की विशेषताएँ:

1. भक्ति भावना का चित्रण:

इन पंक्तियों में भक्ति के तीन मुख्य पक्षों का उल्लेख किया गया है -

- चाकरी में दरसण पास्यँ: यह दर्शाता है कि ईश्वर के साक्षात्कार के लिए सेवा भाव आवश्यक है।
- सुमरण पास्यँ खरची: ईश्वर का सुमिरन (स्मरण) करने से सांसारिक व्यय व्यर्थ नहीं होता; यह आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है।
- भाव भगती जागीरी पास्यँ: सच्चे भाव और भक्ति से ईश्वर की जागीर (संपदा) प्राप्त होती है।

2. सरलता और सहजता:

भाषा सरल और प्रभावशाली है, जो जनमानस को सीधे प्रभावित करती है। भक्ति काव्य में ईश्वर को पाने के लिए किसी आडंबर या बाहरी साधनों की अपेक्षा नहीं की जाती, यह बात यहाँ स्पष्ट होती है।

8

3. तार्किकता और व्यावहारिकता:

पंक्तियाँ भक्त को यह समझाने का प्रयास करती हैं कि ईश्वर प्राप्ति के लिए तीनों बातों (सेवा, स्मरण, और भावभक्ति) का समन्वय होना चाहिए। यह सोच काव्य को गहराई प्रदान करती है।

4. धार्मिक एवं दार्शनिक संदेश:

इन पंक्तियों में ईश्वर प्राप्ति का सरल और गूढ़ मार्ग बताया गया है। यह संदेश देता है कि भक्ति में तीनों बातें एक साथ सजीव होनी चाहिए - सेवा, स्मरण और भाव।

5. सौंदर्यात्मक बिंब:

'दरसण पास्यँ', 'खरची', और 'जागीरी' जैसे शब्दों का चयन सरल लेकिन गहन अर्थ लिए हुए है, जो पाठक के हृदय में भक्ति का भाव जाग्रत करते हैं।

समग्र अर्थ:

इन पंक्तियों का सौंदर्य इस बात में है कि यह भक्ति के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग सरलता और सादगी से प्रस्तुत करती हैं। सेवा, स्मरण और भावभक्ति, ये तीनों यदि समर्पित होकर किए जाएँ तो जीवन का सार समझ में आता है और ईश्वर की निकटता अनुभव होती है।

भाषा अध्ययन

1. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उदाहरण-

भीर	पीडा / कष्ट / दुख
री	की
चीर	वस्त्र
धरयो	धारण किया
कुण्जर	कुंजर, हाथी
बिन्दरावन	वृन्दावन
रहस्यँ	रहूँगी
राखौ	रखिए
बूढता	इबता
लगास्यँ	लगाऊँगी

9

घणा	घना, अधिक
सरसी	सरसना
हिवडो	हृदय
कुसुम्बी	कुसुमी, फूलों वाली

योग्यता विस्तार

1. मीरा के अन्य पदों को याद करके कक्षा में सुनाइए ।

उत्तर 1- (छात्र स्वयं करें।)

मीरा बाई के अन्य प्रसिद्ध पदों में से एक को याद कर कक्षा में सुनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यह पद:

पद:

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

अर्थ: मीरा कहती हैं कि उन्होंने राम नाम रूपी अमूल्य धन प्राप्त कर लिया है, जो कभी नष्ट नहीं होता।

या, एक और लोकप्रिय पद:

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

अर्थ: मीरा कहती हैं कि उनके लिए केवल भगवान श्रीकृष्ण ही सब कुछ हैं और उनके सिवा कोई दूसरा उनके मन में स्थान नहीं रखता।

2. यदि आपको मीरा के पदों के कैसेट मिल सकें तो अवसर मिलने पर उन्हें सुनिए ।

उत्तर 2- (छात्र स्वयं करें।)

मीरा के पद भक्ति और प्रेम से ओतप्रोत हैं, और उनके भाव संगीत के माध्यम से अद्भुत रूप से जीवंत होते हैं। यदि आपको उनकी भजन रिकॉर्डिंग या कैसेट सुनने का अवसर मिले, तो यह एक आध्यात्मिक अनुभव हो सकता है। आप उनके प्रसिद्ध पदों जैसे "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो" और "मीरा के प्रभु गिरधर नागर" को सुनकर उनकी भक्ति के गहरे अर्थ को महसूस कर सकते हैं।

आज के डिजिटल युग में, मीरा के पद यूट्यूब, गाना, स्पॉटिफाई, और अन्य संगीत स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर आसानी से उपलब्ध हैं। आप चाहें तो इन्हें सुनने के लिए इन्हीं साधनों का उपयोग कर सकते हैं।

परियोजना

1. मीरा के पदों का संकलन करके उन पदों को चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

Ncert Solutions of पाठ 2: मीरा

10

उत्तर 1- "मीरा के पद" एक प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है जिसमें संत मीरा बाई के भक्ति पदों का संग्रह किया गया है। ये पद भक्ति, प्रेम और भगवान के प्रति निष्ठा की गहरी अभिव्यक्ति करते हैं। आप मीरा के कुछ प्रसिद्ध पदों का चयन करके उन्हें चार्ट पर लिख सकते हैं और भित्ति पत्रिका पर लगा सकते हैं। यहां कुछ प्रमुख पद दिए गए हैं:

1. पद:

"प्यारी तुम हरि की धाम हो।
मैं तो तेरी राम की बान हो।"

इस पद में मीरा बाई अपने प्रेम और समर्पण को भगवान के प्रति व्यक्त कर रही हैं।

2. पद:

"मेरा सच्चा साथी राम है।
मैं सदा उसी का नाम लेती हूँ।"

इस पद में मीरा का भगवान राम के प्रति अटूट प्रेम झलकता है।

3. पद:

"चाहे तो राजी-खुशियाँ छोड़ दूँ
पर राम का नाम न छोड़ूँ।"

इस पद में वह भगवान के नाम की महिमा पर जोर देती हैं और दुनिया की सुख-सुविधाओं से अधिक मूल्य भगवान के नाम का मानती हैं।

कैसे चार्ट बनाएं:

1. चार्ट पर लिखाई: इन पदों को सुंदर अक्षरों में चार्ट पेपर पर लिखें।
2. चित्र और सजावट: चार्ट के आस-पास मीरा बाई के चित्र, फूल, बांसुरी, या भगवान कृष्ण की तस्वीरें भी जोड़ सकते हैं।
3. रंग और शैली: चार्ट को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न रंगों का उपयोग करें, जैसे पीला, गुलाबी, और नीला।

इन्हें भित्ति पत्रिका पर लगाकर आप मीरा बाई के भक्ति भावनाओं को साझा कर सकते हैं।

2. पहले हमारे यहाँ दस अवतार माने जाते थे। विष्णु के अवतार राम और कृष्ण प्रमुख हैं। अन्य अवतारों के बारे में जानकारी प्राप्त करके एक चार्ट बनाइए ।

उत्तर 2- विष्णु के दस प्रमुख अवतार, जिन्हें दशावतार के नाम से जाना जाता है, हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये अवतार भगवान विष्णु द्वारा पृथ्वी पर विभिन्न समयों में धर्म की रक्षा के लिए लिए गए थे।

यहाँ पर दशावतार के बारे में जानकारी देने वाला चार्ट है:

क्रम संख्या	अवतार का नाम	अवतार का रूप	प्रमुख कार्य/कृतियाँ
1	मत्स्य	मछली	वेदों को राक्षसों से बचाने के लिए जलप्रलय के समय मछली के रूप में प्रकट हुए।
2	कूर्म	कछुआ	समुद्र मंथन में मंदराचल पर्वत को सहारा देने के लिए कछुए के रूप में अवतार लिया।
3	वराह	वराह (सूअर)	पृथ्वी को राक्षस हिरण्याक्ष से बचाने के लिए सूअर के रूप में अवतार लिया।
4	नारसिंह	मानव-शेर	हिरण्यकश्यपु राक्षस का वध करने के लिए मानव और शेर के रूप में प्रकट हुए।
5	वामन	बौना ब्राह्मण	राक्षसों के राजा बलि से तीन पग भूमि की मांग कर के उनका अहंकार नष्ट किया।
6	परशुराम	ब्राह्मण-युवक	क्षत्रियों का वध करने के लिए परशु (कुल्हाड़ी) के साथ प्रकट हुए।
7	राम	मानव	राक्षसों के राजा रावण का वध कर सीता की रक्षा की और धर्म की स्थापना की।
8	कृष्ण	बालक/युवक	महाभारत में अर्जुन के सारथी बने और गीता का उपदेश दिया।
9	बुद्ध	सिद्ध	अहिंसा का प्रचार करने के लिए भगवान बुद्ध के रूप में अवतार लिया।
10	कल्कि	घोड़े पर सवार योद्धा	भविष्य में कलियुग के अंत में अधर्म का नाश करने के लिए प्रकट होंगे।

यह अवतार भगवान विष्णु के पृथ्वी पर विभिन्न कार्यों के लिए प्रकट होने के संकेत हैं, और प्रत्येक अवतार का एक खास उद्देश्य और संदेश है।

पाठ 2: मीरा पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, भावार्थ

कबीर की साखी पर आधारित प्रत्येक का भावार्थ

पद 1:

हरि आप हरो जन री भीर।

द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।

भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

बूढतो गजराज राख्यो, काटी वुफण्जर पीर।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

12

भावार्थ (हरि आप हरो जन री भीर):

हे प्रभु हरि! आप अपने भक्तों की हर पीड़ा को दूर करने वाले हैं। आपने द्रौपदी की लाज को बचाने के लिए अपने आप चीर बढ़ाया। भक्तों की रक्षा के लिए आप नरहरि (नरसिंह) रूप में स्वयं अवतरित हुए। गजेंद्र की रक्षा करके आपने उसे मगर की पीड़ा से मुक्ति दिलाई। ऐसे कृपालु गिरधर नागर! आपकी दासी मीरा आपसे प्रार्थना करती है—जैसे आपने अन्य भक्तों की पीड़ा हर ली, वैसे ही मेरी पीड़ा भी हर लीजिए।

पद 2:

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,

गिरधारी लाला म्हाने चाकर राखोजी।

चाकर रहस्युँ बाग लगास्युँ नित उठ दरसण पास्युँ।

बिन्दरावन री वंफुज गली में, गोविन्द लीला गास्युँ।

चाकरी में दरसण पास्युँ, सुमरण पास्युँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्युँ, तीनूं बातों सरसी।

मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।

बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।

ऊँफचा ऊँफचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।

साँवरिया रा दरसण पास्युँ, पहर वुफसुम्बी साडी।

आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।

मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवडो घणो अधीराँ।।

पद 2 का भावार्थ (स्याम म्हाने चाकर राखो जी):

यह पद मीरा बाई की भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट भक्ति को दर्शाता है। मीरा कहती हैं - हे प्रभु हरि! आप सदैव अपने भक्तों की पीड़ा हरते हैं। जब द्रौपदी की लाज संकट में थी, आपने चीर को बढ़ाकर उसकी रक्षा की। जब हिरण्यकशिपु जैसे राक्षस का अंत करना पड़ा, तब आप नरसिंह रूप में अवतरित होकर भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए स्वयं पधारे। आपने गजेंद्र (गजराज) को मगर के संकट से मुक्त कर उसकी पीड़ा दूर की।

अब मीरा, जो आपकी दासी है, गिरधर नागर से विनती करती है - जैसे आपने अपने भक्तों की विपत्ति हर ली, वैसे ही मेरी भी पीड़ा हर लीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

www.ncertsolutionhub.in

Ncert solutions for class 10 Hindi
Free Pdf Download on www.ncertsolutionhub.in

प्रश्न 1: मीराबाई का जीवन दुखों से भरा हुआ था। उनके जीवन की प्रमुख घटनाएँ कौन-सी थीं, जिन्होंने उन्हें भक्ति मार्ग की ओर प्रेरित किया?

उत्तर: भक्त कवयित्री का जीवन अनेक दुखद घटनाओं से प्रभावित रहा। उनका जन्म 1503 ई. में जोधपुर के चोकडी गांव (वृदकी) में हुआ था। मात्र 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ। बाल्यकाल में ही माँ की मृत्यु हो गई, और विवाह के कुछ वर्षों बाद पति, पिता तथा एक युद्ध के दौरान ससुर का भी निधन हो गया। ये सभी घटनाएँ मीरा को सांसारिक जीवन से विमुख करने लगीं। उन्होंने परिवार और महल का मोह छोड़कर वृंदावन में गिरधर गोपाल (श्रीकृष्ण) की भक्ति में स्वयं को समर्पित कर दिया। इन दुखों ने ही उन्हें ईश्वर की ओर मोड़ा और भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

प्रश्न 2: मीराबाई की भक्ति किन विशेषताओं से युक्त थी और उनके भक्ति पदों में किस प्रकार के भाव देखने को मिलते हैं?

उत्तर: भक्त कवयित्री की भक्ति एकनिष्ठ, समर्पित और प्रेममय थी। उनकी भक्ति में दैन्य भाव (अत्यंत विनम्रता) और माधुर्य भाव (प्रेम रस) दोनों की झलक मिलती है। वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण को कभी प्रियतम, कभी प्रभु और कभी मालिक मानती थीं। उनके पदों में कहीं वे मनुहार करती हैं, कहीं उलाहना देती हैं और कहीं अपनी पीड़ा साझा करती हैं। उनके पदों में ईश्वर के प्रति गहरी श्रद्धा, प्रेम, व्याकुलता और समर्पण का सजीव चित्रण मिलता है। मीरा के आराध्य कभी निर्गुण ब्रह्म के रूप में तो कभी सगुण श्रीकृष्ण के रूप में दृष्टिगत होते हैं।

प्रश्न 3: मीराबाई के पदों में भाषा की क्या विशेषताएँ हैं और उनकी रचनाओं की लोकप्रियता किन-किन क्षेत्रों में है?

उत्तर: भक्त कवयित्री के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। साथ ही इनमें खड़ी बोली, पंजाबी और पूर्वी हिंदी के भी अंश मिलते हैं। उनके पद सरल, भावपूर्ण और संगीतात्मक हैं, जो पाठकों और श्रोताओं को भावविभोर कर देते हैं। यही कारण है कि मीरा के पद न केवल राजस्थान और उत्तर भारत में, बल्कि गुजरात, बिहार और बंगाल जैसे राज्यों में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उनकी रचनाएँ भक्तिकाल की अमूल्य धरोहर हैं, जिन्हें आज भी भजन के रूप में गाया जाता है।

प्रश्न 4: मीरा बाई के पहले पद “हरि आप हरो जन री भीर” में क्या संदेश है और इसका आध्यात्मिक महत्त्व क्या है?

उत्तर: भक्त कवयित्री का यह पद उनके आराध्य श्रीकृष्ण से दया और रक्षा की प्रार्थना है। वे श्रीकृष्ण से कहती हैं कि जैसे आपने द्रौपदी की लाज बचाई, नरसिंह रूप में प्रह्लाद की रक्षा की, और गजेंद्र को मगर से मुक्त किया – वैसे ही मेरी भी पीड़ा हरे। यह पद मीरा के आत्मसमर्पण और भगवान में पूर्ण विश्वास को दर्शाता है। इसमें भक्त और भगवान के बीच के गहरे संबंध को रेखांकित किया गया है। यह पद आध्यात्मिक दृष्टि से बताता है कि ईश्वर अपने भक्तों की हर संकट में रक्षा करते हैं।

प्रश्न 5: “स्याम म्हाने चाकर राखो जी” पद में मीरा का ईश्वर से कैसा अनुरोध है और उसमें भक्ति की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

उत्तर: इस पद में भक्त कवयित्री श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि वे उन्हें अपना सेवक (चाकर) बना लें। वह कहती हैं कि मैं आपकी सेवा में जीवन बिताना चाहती हूँ, आपके लिए बाग लगाऊँगी, आपके दर्शन करूँगी और वृंदावन की गलियों में आपकी लीलाओं का गान करूँगी। मीरा की यह प्रार्थना उनकी एकनिष्ठता, विनम्रता और सेवा-भाव को उजागर करती है। इस पद में भक्ति का भावात्मक सौंदर्य और गोपीभाव की झलक मिलती है, जिसमें भक्त अपने आराध्य को प्रेमपूर्वक मालिक मानकर उसकी सेवा में स्वयं को अर्पित करता है।

प्रश्न 6: मीराबाई के भक्ति साहित्य में उनके गुरु रैदास का क्या योगदान है?

उत्तर: भक्त कवयित्री संत रैदास की शिष्या थीं। रैदास ने उन्हें आत्मज्ञान, समर्पण और ईश्वर की सच्ची भक्ति का मार्ग दिखाया। रैदास के प्रभाव से मीरा ने जात-पात, सामाजिक बंधनों और राजसी वैभव को त्याग कर भक्तिपथ को अपनाया। मीरा की रचनाओं में रैदास के विचारों की छाया स्पष्ट दिखाई देती है, विशेषकर भक्ति में समता, प्रेम और निर्भयता जैसे गुण। रैदास के उपदेशों ने मीरा को आत्मबल दिया, जिसके कारण उन्होंने समाज की रूढ़ियों से टकराकर भी अपनी भक्ति को न छोड़ा।

प्रश्न 7: मीराबाई के भक्ति पदों में स्त्री-सशक्तिकरण की कौन-सी झलक देखने को मिलती है?

उत्तर: भक्त कवयित्री का जीवन और साहित्य दोनों ही स्त्री-सशक्तिकरण के प्रतीक हैं। उन्होंने सामाजिक बंधनों, पति-पत्नी के संबंधों की परंपरागत व्याख्याओं, और धार्मिक रूढ़ियों का विरोध करते हुए अपने अधिकार से ईश्वर को प्रेम किया। एक महिला होकर उन्होंने राजघराने और समाज से टकराते हुए ईश्वर भक्ति को प्राथमिकता दी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक स्त्री भी बिना पुरुष आश्रय के आध्यात्मिक मार्ग पर चल सकती है। उनके पदों में आत्मबल, निर्भयता और संकल्प की छवि स्त्रियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

प्रश्न 8: मीराबाई का आध्यात्मिक जीवन कैसे प्रारंभ हुआ और उन्होंने सांसारिक जीवन को क्यों त्यागा?

उत्तर: भक्त कवयित्री का आध्यात्मिक जीवन उनके जीवन के दुखद अनुभवों से शुरू हुआ। विवाह के कुछ वर्षों बाद उनके पति, पिता और श्वसुर का निधन हो गया, जिससे वे भौतिक जीवन से विमुख हो गईं। दुखों से पीड़ित मीरा ने सांसारिक जीवन को त्यागकर वृंदावन में निवास किया और स्वयं को श्रीकृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया। उन्होंने गिरधर गोपाल को अपना आराध्य मानते हुए भक्ति और साधना के पथ को अपनाया।

प्रश्न 9: मीराबाई की भाषा शैली की विशेषताएँ क्या हैं और उनकी रचनाओं में कौन-कौन सी भाषाओं का मिश्रण है?

उत्तर: भक्त कवयित्री की भाषा शैली सहज, भावनात्मक और भक्तिपरक है। उनके पदों में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाषाओं का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। इसके साथ ही पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी बोलियों के प्रयोग भी देखे जा सकते हैं। यह भाषिक विविधता उनकी कविताओं को जनमानस से जोड़ती है और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रिय बनाती है। मीरा की भाषा हृदय से निकली भक्ति की सच्ची अभिव्यक्ति है।

प्रश्न 10: मीराबाई के पदों में श्रीकृष्ण के कौन-कौन से रूपों की कल्पना की गई है?

उत्तर: भक्त कवयित्री के पदों में श्रीकृष्ण के अनेक रूपों की सुंदर कल्पना की गई है। कहीं वे उन्हें निर्गुण, निराकार ब्रह्म के रूप में देखती हैं, तो कहीं सगुण, साकार गोपीवल्लभ के रूप में। इसके अतिरिक्त, मीरा उन्हें

निर्मोही जोगी और मुरली बजाने वाले ग्वाले के रूप में भी संकल्पित करती हैं। उनका प्रेम श्रीकृष्ण के हर रूप में समर्पित और गहरा है, जो उनके पदों की आत्मा बनकर प्रकट होता है।

प्रश्न 11: "हरि आप हरो जन री भीर" पद में मीराबाई भगवान से क्या विनती करती हैं?

उत्तर: "हरि आप हरो जन री भीर" पद में भक्त कवयित्री भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि जैसे उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई और गजराज को संकट से निकाला, वैसे ही वे मीरा की पीड़ा भी हर लें। इस पद में भक्त कवयित्री का गहरा विश्वास झलकता है कि भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। वह स्वयं को दासी मानते हुए गिरधर गोपाल से सहायता की याचना करती हैं, जो उनके पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

प्रश्न 12: "स्याम म्हाने चाकर राखो जी" पद में मीराबाई की भक्ति का स्वरूप कैसे प्रकट होता है?

उत्तर: "स्याम म्हाने चाकर राखो जी" पद में भक्त कवयित्री की भक्ति भावपूर्ण और समर्पित स्वरूप में दिखाई देती है। वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण से विनती करती हैं कि वे उन्हें अपनी चाकरानी बना लें। मीरा कृष्ण की सेवा, दर्शन और सुमिरन में जीवन बिताना चाहती हैं। वे वृंदावन की गलियों में गोविंद की लीलाओं का गान करना चाहती हैं। इस पद में भक्त और भगवान के रिश्ते की मधुरता और आध्यात्मिक ऊँचाई स्पष्ट होती है।

प्रश्न 13: मीराबाई को मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में किस कारण विशेष स्थान प्राप्त है?

उत्तर: भक्त कवयित्री को मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में उनके गहन भक्ति भाव, व्यक्तिगत समर्पण और स्त्री चेतना के कारण विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उन्होंने भक्ति को जीवन का सार मानते हुए अपने आराध्य श्रीकृष्ण को ही पति और जीवनसाथी स्वीकार किया। सामाजिक बंधनों को तोड़कर उन्होंने भक्ति की स्वतंत्र राह चुनी। उनके पदों में भक्तिपूर्ण प्रेम, करुणा और ईश्वर के प्रति निष्कलंक समर्पण देखने को मिलता है, जिसने उन्हें भक्ति युग की अमर कवयित्री बना दिया।

मीरा बाई – जीवन और पदों पर आधारित लघु प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1: मीराबाई का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर: भक्त कवयित्री का जन्म 1503 ईस्वी में जोधपुर के चोकडी नामक गाँव (वर्तमान में मेड़ता, राजस्थान) में हुआ था। उनका जन्म एक राजपूत राजपरिवार में हुआ था।

प्रश्न 2: मीराबाई का विवाह किससे हुआ था?

उत्तर: भक्त कवयित्री का विवाह मेवाड़ के राजा महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था। विवाह के कुछ वर्षों बाद ही उनके पति का निधन हो गया।

प्रश्न 3: मीरा बाई ने सांसारिक जीवन क्यों त्याग दिया?

उत्तर: भक्त कवयित्री ने भौतिक जीवन की पीड़ा, पति और पिता की मृत्यु तथा पारिवारिक दुखों से निराश होकर घर-परिवार त्याग दिया और वृंदावन जाकर भगवान कृष्ण के चरणों में समर्पित जीवन बिताया।

प्रश्न 4: मीरा बाई की भक्ति का स्वरूप क्या था?

उत्तर: भक्त कवयित्री की भक्ति एकनिष्ठ, आत्म-समर्पित और माधुर्य भाव से परिपूर्ण थी। वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण को पति और प्रियतम के रूप में देखती थीं और उन्हें संपूर्ण प्रेम और श्रद्धा के साथ पूजती थीं।

प्रश्न 5: मीरा बाई किन भाषाओं में कविता रचती थीं?

उत्तर: भक्त कवयित्री की रचनाओं में राजस्थानी, ब्रजभाषा, गुजराती के साथ-साथ पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी हिंदी का भी मिश्रण देखने को मिलता है। वे हिंदी और गुजराती दोनों भाषाओं की प्रमुख कवयित्री मानी जाती हैं।

प्रश्न 6: मीरा बाई के किस गुरु का प्रभाव उन पर पड़ा?

उत्तर: भक्त कवयित्री संत रैदास की शिष्या थीं। रैदास जी की आध्यात्मिक शिक्षाओं और भक्ति भाव ने मीरा के जीवन और रचनाओं पर गहरा प्रभाव डाला।

प्रश्न 7: पद “हरि आप हरो जन री भीर” में मीरा बाई क्या प्रार्थना करती हैं?

उत्तर: इस पद में भक्त कवयित्री भगवान श्रीकृष्ण से अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना करती हैं। वे द्रौपदी, प्रह्लाद और गजराज जैसे भक्तों की रक्षा के उदाहरण देते हुए उनसे अपनी भी रक्षा करने की विनती करती हैं।

प्रश्न 8: मीरा बाई अपने आराध्य कृष्ण को किस रूप में देखती हैं?

उत्तर: भक्त कवयित्री श्रीकृष्ण को गिरधर नागर, मोहन मुरली वाला, गोविंद लीला पुरुष और प्रेम स्वरूप प्रियतम के रूप में देखती हैं। वे उन्हें कभी निर्गुण ब्रह्म, कभी साकार भगवान और कभी जोगी के रूप में भी चित्रित करती हैं।

प्रश्न 9: “स्याम म्हाने चाकर राखो जी” पद में मीरा की क्या भावना है?

उत्तर: इस पद में भक्त कवयित्री भगवान श्रीकृष्ण से सेवा करने का वरदान मांगती हैं। वे चाहती हैं कि वे कृष्ण की दासी बनकर वृंदावन में उनकी लीला गायें, दर्शन करें और भाव भक्ति के माध्यम से अपने जीवन को सार्थक बनाएं।

प्रश्न 10: मीरा बाई की रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: भक्त कवयित्री की रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ हैं—गहरी भक्ति भावना, प्रेम और समर्पण, सरल भाषा, लोक शैली, नारी दृष्टिकोण और कृष्ण के प्रति आत्म विसर्जन। उनके पदों में आत्मानुभूति और आध्यात्मिकता की झलक मिलती है।

प्रश्न 11: मीरा बाई ने अपने आराध्य कृष्ण को “चाकर” बनाने की बात क्यों कही?

उत्तर: भक्त कवयित्री ने भगवान कृष्ण को “चाकर” बनाने की नहीं, बल्कि स्वयं को उनका चाकर (सेवक) बनाए रखने की प्रार्थना की है। वे चाहती थीं कि वे प्रभु की सेवा करती रहें, उनके दर्शन करें और उनके गुण गाते हुए जीवन व्यतीत करें।

प्रश्न 12: मीरा के पदों में भाव-भक्ति की कौन-सी विशेषता प्रमुख रूप से दिखाई देती है?

उत्तर: भक्त कवयित्री के पदों में माधुर्य भाव की प्रधानता है। वे कृष्ण को अपना प्रियतम मानकर उनसे प्रेम करती हैं और इस प्रेम में समर्पण, सेवा, उलाहना और वात्सल्य का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

प्रश्न 13: मीरा बाई ने जीवन की कठिनाइयों का सामना किस तरह किया?

उत्तर: भक्त कवयित्री ने जीवन की कठिनाइयों को भक्ति के माध्यम से सहा। परिवार, समाज और राज दरबार से विरोध के बावजूद उन्होंने श्रीकृष्ण में पूर्ण आस्था रखी और भक्ति मार्ग पर अडिग रहीं।

प्रश्न 14: मीरा बाई की रचनाओं में कौन-कौन से धार्मिक प्रभाव दिखते हैं?

उत्तर: भक्त कवयित्री की रचनाओं पर वैष्णव भक्ति, संत परंपरा, रैदास जी के उपदेशों, योगियों और निर्गुण-सगुण भक्तियों का सम्मिलित प्रभाव देखने को मिलता है।

प्रश्न 15: “हरि आप हरो जन री भीर” पद में मीरा किस प्रसंग का उल्लेख करती हैं?

उत्तर: इस पद में भक्त कवयित्री द्रौपदी के चीरहरण, प्रह्लाद की रक्षा, और गजराज के संकट हरने की घटनाओं का उल्लेख करती हैं। ये सभी प्रसंग भगवान द्वारा अपने भक्तों की रक्षा करने के प्रमाण हैं।

प्रश्न 16: मीरा बाई के अनुसार सच्ची भक्ति क्या है?

उत्तर: भक्त कवयित्री के अनुसार सच्ची भक्ति वह है जिसमें भक्त अपने आराध्य में पूरी तरह समर्पित हो जाए, उसे प्रियतम, स्वामी और जीवन का अंतिम लक्ष्य मान ले। इसमें प्रेम, सेवा और स्मरण भाव प्रमुख हैं।

प्रश्न 17: मीरा बाई की भाषा शैली की क्या विशेषता है?

उत्तर: भक्त कवयित्री की भाषा सरल, भावपूर्ण और सहज है। उनके पदों में ब्रज, राजस्थानी, गुजराती और खड़ी बोली का सुंदर मिश्रण मिलता है, जिससे उनकी रचनाएँ जन-जन में लोकप्रिय हो गईं।

प्रश्न 18: मीरा ने श्रीकृष्ण को किन-किन रूपों में देखा है?

उत्तर: भक्त कवयित्री ने श्रीकृष्ण को गोविंद, गिरधारी, मोहन मुरली वाला, ब्रजवासी चरवाहा और सगुण-निर्गुण ब्रह्म के रूप में अनुभव किया है। वे उन्हें पति, मित्र, स्वामी और आराध्य सब मानती थीं।

प्रश्न 19: मीरा के पदों में नारी दृष्टिकोण का क्या महत्व है?

उत्तर: भक्त कवयित्री के पदों में नारी की वेदना, प्रेम, त्याग और आत्म-समर्पण की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उन्होंने सामाजिक बंधिशों को तोड़कर स्त्री चेतना और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

प्रश्न 20: मीरा बाई की कविताएँ आज भी क्यों प्रासंगिक हैं?

18

उत्तर: भक्त कवयित्री की कविताएँ आज भी इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे प्रेम, समर्पण और आत्मा की पुकार को व्यक्त करती हैं। उनके भक्ति भाव में जो सच्चाई और आत्मिक तड़प है, वह आज के युग में भी शांति और प्रेरणा देती है।

मीरा बाई पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

प्रश्न 1: मीरा बाई का जन्म कहाँ हुआ था?

- A. वृंदावन
- B. चित्तौड़गढ़
- C. चोकडी (मेड़ता)
- D. द्वारका

उत्तर: C. चोकडी (मेड़ता)

प्रश्न 2: भक्त कवयित्री का विवाह किससे हुआ था?

- A. महाराणा प्रताप से
- B. भोजराज से
- C. राणा सांगा से
- D. कुंभा राणा से

उत्तर: B. भोजराज से

प्रश्न 3: भक्त कवयित्री किस संत की शिष्या मानी जाती हैं?

- A. तुलसीदास
- B. कबीर
- C. रैदास
- D. नामदेव

उत्तर: C. रैदास

प्रश्न 4: भक्त कवयित्री का आराध्य देव कौन था?

- A. राम
- B. विष्णु
- C. गणेश
- D. श्रीकृष्ण

19

उत्तर: D. श्रीकृष्ण

प्रश्न 5: "हरि आप हरो जन री भीर" पद में भक्त कवयित्री किसकी पीड़ा हरने की बात करती हैं?

- A. राधा की
- B. अर्जुन की
- C. द्रौपदी, गजराज और प्रह्लाद की
- D. कुंती की

उत्तर: C. द्रौपदी, गजराज और प्रह्लाद की

प्रश्न 6: भक्त कवयित्री की रचनाओं में किस भाषा का मिश्रण है?

- A. संस्कृत और तमिल
- B. ब्रज, राजस्थानी और गुजराती
- C. मैथिली और उर्दू
- D. खड़ी बोली और अंगिका

उत्तर: B. ब्रज, राजस्थानी और गुजराती

प्रश्न 7: भक्त कवयित्री की भक्ति किस भाव पर आधारित है?

- A. शांता भाव
- B. दास्य भाव
- C. माधुर्य भाव
- D. वात्सल्य भाव

उत्तर: C. माधुर्य भाव

प्रश्न 8: भक्त कवयित्री ने किस स्थान पर जाकर भक्ति साधना की?

- A. अयोध्या
- B. द्वारका
- C. वृंदावन
- D. उज्जैन

उत्तर: C. वृंदावन

प्रश्न 9: भक्त कवयित्री की प्रसिद्ध रचनाएँ किस शैली में होती हैं?

- A. खंडकाव्य
- B. दोहा

20

C. पद

D. नाटक

उत्तर: C. पद

प्रश्न 10: निम्न में से कौन-सा कथन मीरा बाई के बारे में सही है?

A. वे निर्गुण ब्रह्म की उपासक थीं

B. वे सगुण और निर्गुण दोनों की भक्ति करती थीं

C. वे केवल योग की साधना करती थीं

D. उन्होंने कभी काव्य नहीं लिखा

उत्तर: B. वे सगुण और निर्गुण दोनों की भक्ति करती थीं

प्रश्न 11: भक्त कवयित्री किस काल की कवयित्री मानी जाती हैं?

A. आधुनिक काल

B. प्राचीन काल

C. भक्ति काल

D. रीतिकाल

उत्तर: C. भक्ति काल

प्रश्न 12: भक्त कवयित्री की रचनाओं का प्रमुख विषय क्या है?

A. राजनीति

B. समाज सुधार

C. ईश्वर भक्ति

D. युद्ध

उत्तर: C. ईश्वर भक्ति

प्रश्न 13: मीरा बाई के अनुसार उनका सच्चा स्वामी कौन था?

A. भोजराज

B. कृष्ण

C. रैदास

D. विष्णु

उत्तर: B. कृष्ण

प्रश्न 14: "गिरधारी लाला म्हाने चाकर राखो जी" में मीरा का भाव कौन-सा है?

21

- A. वात्सल्य भाव
- B. दास्य भाव
- C. शृंगार भाव
- D. करुणा भाव

उत्तर: B. दास्य भाव

प्रश्न 15: मीरा बाई ने किस भौतिक जीवन से मुक्ति पाकर भक्ति मार्ग अपनाया?

- A. विवाह के बाद
- B. वनवास के दौरान
- C. पति, पिता और श्वसुर की मृत्यु के बाद
- D. युवावस्था में

उत्तर: C. पति, पिता और श्वसुर की मृत्यु के बाद

प्रश्न 16: मीरा बाई के पदों में मुख्य रूप से किस भाषा का प्रभाव देखा जाता है?

- A. फारसी
- B. संस्कृत
- C. ब्रज और राजस्थानी
- D. हिंदी और उर्दू

उत्तर: C. ब्रज और राजस्थानी

प्रश्न 17: मीरा बाई की कविताओं में किसका वर्णन अधिक होता है?

- A. युद्धों का
- B. धार्मिक विवादों का
- C. श्रीकृष्ण की लीलाओं का
- D. सामाजिक सुधारों का

उत्तर: C. श्रीकृष्ण की लीलाओं का

प्रश्न 18: मीरा बाई को भक्ति में किस गुरु का मार्गदर्शन मिला?

- A. तुलसीदास
- B. नानक देव
- C. संत रैदास
- D. कबीर

उत्तर: C. संत रैदास

22

प्रश्न 19: मीरा बाई के अनुसार सच्ची सेवा किसकी होती है?

- A. पति की
- B. राज्य की
- C. ईश्वर की
- D. समाज की

उत्तर: C. ईश्वर की

प्रश्न 20: "मीरा रा प्रभु गिरधर नागर, हिवडो घणो अधीरॉ" में कौन-सा भाव प्रकट होता है?

- A. भक्ति में अनुराग
- B. घृणा
- C. वीर रस
- D. हास्य

उत्तर: A. भक्ति में अनुराग

मीराबाई पर आधारित सही या गलत प्रश्न (True or False)

- मीराबाई का जन्म जोधपुर के चोकडी गाँव में 1503 ई. में हुआ था।
उत्तर: सही
- मीराबाई ने बचपन से ही राज्य की राजनीति में गहरी रुचि ली थी।
उत्तर: गलत
- मीराबाई का विवाह मेवाड़ के राजा महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था।
उत्तर: सही
- मीराबाई ने अपने पति की मृत्यु के बाद ही कृष्ण भक्ति का मार्ग अपनाया।
उत्तर: गलत (मीरा बचपन से ही कृष्ण को पति मानती थीं।)
- मीराबाई संत रैदास की शिष्या थीं।
उत्तर: सही
- मीराबाई के पदों में केवल संस्कृत भाषा का प्रयोग होता है।
उत्तर: गलत (मीरा की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का मिश्रण है।)
- मीरा के पदों में भक्ति रस और माधुर्य भाव की प्रधानता है।
उत्तर: सही

Ncert Solutions of पाठ 2: मीरा

23

- मीराबाई के पद केवल राजस्थान और गुजरात तक सीमित रहे हैं।
उत्तर: गलत (उनके पद पूरे उत्तर भारत में प्रसिद्ध हैं।)
- मीरा ने अपने पदों में श्रीकृष्ण को प्रेमी,पति और स्वामी के रूप में चित्रित किया है।
उत्तर: सही
- मीराबाई ने भक्ति के माध्यम से समाज में नारी स्वाभिमान और आध्यात्मिक चेतना को उजागर किया।
उत्तर: सही
- मीराबाई ने सांसारिक जीवन त्यागकर वृंदावन में गिरधर गोपाल की भक्ति की।
उत्तर: सही
- मीराबाई की रचनाओं में केवल निर्गुण भक्ति की भावना प्रकट होती है।
उत्तर: गलत (मीरा के पदों में सगुण और निर्गुण दोनों का चित्रण है।)
- मीराबाई की भाषा में खड़ी बोली और पंजाबी के भी कुछ तत्व मिलते हैं।
उत्तर: सही
- मीरा के काव्य में धार्मिकता के साथ-साथ सामाजिक विद्रोह की भावना भी देखी जाती है।
उत्तर: सही
- मीराबाई ने श्रीकृष्ण को अपने आराध्य और स्वामी के रूप में नहीं,केवल मित्र के रूप में स्वीकार किया।
उत्तर: गलत
- मीरा की कुल सात या आठ रचनाएँ ही उपलब्ध हैं।
उत्तर: सही
- मीराबाई की कविताएँ केवल धार्मिक विषयों तक सीमित रहती हैं, उनमें कोई भावनात्मक पक्ष नहीं होता।
उत्तर: गलत (मीरा के पदों में गहरा भावनात्मक पक्ष होता है।)
- मीरा ने अपने पदों में श्रीकृष्ण को गोविंद, गिरधर, मोहन जैसे नामों से पुकारा है।
उत्तर: सही
- मीराबाई की भक्ति पर योगी और वैष्णव दोनों परंपराओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।
उत्तर: सही
- मीराबाई की रचनाएँ केवल हिंदी भाषा में ही मिलती हैं, गुजराती में नहीं।
उत्तर: गलत (मीरा हिंदी और गुजराती दोनों की कवयित्री मानी जाती हैं।)

रिक्त स्थान भरिए (Fill in the Blanks)

1. _____ गाँव में 1503 ईस्वी में एक भक्त कवयित्री का जन्म हुआ था।
उत्तर: चोकड़ी (मंडोर के पास)
2. 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह मेवाड़ के शासक _____ के पुत्र भोजराज से हुआ।
उत्तर: महाराणा सांगा
3. भक्त कवयित्री ने सांसारिक मोह छोड़कर _____ में कृष्ण भक्ति का मार्ग अपनाया।
उत्तर: वृंदावन
4. इनकी रचनाओं में _____ और ब्रज भाषा का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है।
उत्तर: राजस्थानी
5. उन्होंने _____ को अपना आराध्य और जीवन साथी माना।
उत्तर: गिरधर गोपाल
6. उनकी भाषा में _____ और पूर्वी बोलियों का भी प्रयोग पाया जाता है।
उत्तर: पंजाबी
7. भक्त कवयित्री ने अपने पदों में _____ से प्रभु को चीर बढ़ाने वाले के रूप में वर्णित किया है।
उत्तर: द्रौपदी की रक्षा
8. उनके भक्ति पदों में मुख्यतः _____ और माधुर्य भाव की प्रधानता होती है।
उत्तर: दैन्य भाव
9. उन्होंने जीवनभर _____ के साथ एकनिष्ठ प्रेम और भक्ति का संबंध रखा।
उत्तर: श्रीकृष्ण
10. इनकी कुल सात से आठ _____ आज भी भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।
उत्तर: रचनाएँ
11. भक्त कवयित्री ने अपने आराध्य को कभी जोगी, कभी सखा और कभी _____ के रूप में देखा।
उत्तर: पति
12. उनकी भक्ति पर संत _____ का गहरा प्रभाव देखा जाता है।
उत्तर: रैदास
13. वे जिस प्रभु को पुकारती थीं, उसे वे प्रायः _____ नाम से संबोधित करती थीं।
उत्तर: गिरधर

25

14. भक्त कवयित्री के भजन भारत के कई राज्यों में जैसे बिहार, गुजरात और _____ में प्रचलित हैं।

उत्तर: बंगाल

15. इनकी काव्य भाषा में ब्रज, गुजराती के साथ-साथ _____ भाषा के भी शब्द मिलते हैं।

उत्तर: खड़ी बोली

16. उन्होंने अपने पदों में प्रभु से कभी मिन्नतें की हैं तो कभी _____ भी जताया है।

उत्तर: उलाहना

17. वे रात्रि में प्रभु दर्शन की कामना करती थीं और उसे _____ के तट पर बुलाती थीं।

उत्तर: यमुना

18. उनके भजन भाव, भक्ति और _____ से ओतप्रोत होते हैं।

उत्तर: समर्पण

19. उनका विश्वास था कि प्रभु अपने भक्तों की पीड़ा को _____ कर लेते हैं।

उत्तर: हर

20. वे सांसारिक दुखों से विरक्त होकर केवल _____ में लीन हो गई थीं।

उत्तर: भक्ति